ज्ञान युग

ध्यान युग यानि ज्ञान युग क्योंकि ध्यान से ही ज्ञान मिलता है। ध्यान के बिना ज्ञान नहीं। ज्ञान अर्थात आत्मज्ञान। ज्ञानी यानि ब्रह्मज्ञानी। आत्मज्ञान का मतलब है – मैं शरीर नहीं, आत्मा हूँ। ध्यान युग ही ज्ञान युग का श्रीगणेश है। ध्यानयुग से ही इस भूमण्डल पर ज्ञानयुग की स्थापना हो सकती है।

अज्ञान ही दु:ख का मूल कारण है।

अज्ञान ही रोगां का मूल कारण है।

अज्ञान ही युद्ध का मूल है।

अज्ञान ही वार्धक्य का मूल है।

अत: ध्यान की स्थापना करेंगे। अज्ञान का वध करेंगे।